Sixteenth Loksabha

an>

Title: Need to formulate a comprehensive policy to improve the condition of farmers in the country.

श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा): आज देश भर में किसानों की क्या दुर्दशा है, आपसे कुछ छुपा हुआ नहीं है। जो देश का अन्नदाता है, वही भूखा और बदहाली का जीवन जीने के लिए मजबूर है। किसान खुद तो भूखा सो जाता है, पर दूसरे का पेट भरने की चिन्ता उसे हमेशा सताती है। सरकार कर्तव्य बनता है कि हमारे किसानों की समस्याओं का समुचित हल निकाले। हमारा देश कृषि प्रधान देश है। हम अनाज के मामले में आत्मनिर्भर तो हो गये हैं, लेकिन किसान दिनों-दिन गरीब होता जा रहा है। यह एक विचारणीय प्रश्न है।

देश में 68 फीसदी खेती वर्षा पर निर्भर है और वर्षा कम व ज्यादा होने पर इसका असर खेती पर सीधा पड़ता है। सिंचाई की समुचित व्यवस्था अभी तक नहीं हो पाई है। बिचौलिये और साहूकारों के कर्ज के बोझ से किसान हमेशा दबा रहता है। देश के किसी बड़े भाग में बाढ़ आ जाती है, तो काफी बड़े भू-भाग में सुखाड़ आ जाता है। प्राकृतिक आपदाएं आती ही रहती हैं। समय से खाद और बीज नहीं मिलता। उत्तम किस्म के बीजों का अभाव व उसका इतना अधिक मूल्य होता है कि उसे खरीद नहीं पाते हैं। कीटनाशक दवाइयां भी अत्यधिक महंगी हो चुकी हैं। फसल बीमा योजना किसानों को किसी भी तरह से मदद करने में अपनी भूमिका साबित करने में असफल हो रही है। किसानों को फसल और सब्जियों के रख-रखाव और समुचित मूल्य नहीं मिलता। फसल पैदा होने पर खरीददार नहीं होते, जिससे बिचौलिए को मजबूरन कम दामें पर बेचना पड़ता है। जब किसानों के उत्पाद उनके हाथों से निकल जाता है, तो बाजार में रेट दोगुना हो जाता है। यह कैसी विडम्बना है।

मैं समझता हूँ कि किसानों के बारे में किसी न किसी विषय पर प्रत्येक सत्र में चर्चा जरुरी होती है, मगर समस्या जस की तस बनी हुई है। अतः देश के अन्नदाता के खुशहाल जीवन जीने की दिशा में कोई ठोस पहल कार्य योजना बनाई जाए।